Research Article | Education | Volume : 10 | Special Issue | August 2025 | e-ISSN : 2456-5040

रोजगार संवर्धन हेतु स्वावलम्बी भारत अभियान के प्रयास

सोनल[1], प्रो.(डॉ.) अनुराग अग्रवाल[2]

[1] शोध–छात्रा, वाणिज्य, एम.जे.पी. रूहेलखण्ड, विष्वविद्यालय बरेली, उ.प्र.

[2] अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग, स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज शाहजहाँपुर, उ.प्र.

ABSTRACT

भारत में बेरोजगारी को दृष्टिगत रखते हुए यह आवश्यक समझा गया कि इस समस्या का समाधान ढूंढने के लिए गंभीर प्रयासों के साथ–साथ जन जागरूकता भी आवश्यक है। भारत में तेजी से बढ़ रहे युवा बेरोजगारों को उद्यमिता की ओर प्रोत्साहित करने के लिए 21 अगस्त 2022 को स्वावलम्बी भारत अभियान प्रारम्भ किया गया। यह अभियान प्रत्यक्ष कार्यक्रमों तथा डिजिटल मंच का प्रयोग करते हुए, भारत के युवाओं को अपनी क्षमता और कौशल का विकास करके स्वरोजगार स्थापित करने में सहायता करता है। इस हेतु अभियान के अन्तर्गत अनेक प्रकार के प्रयास किये जाते हैं।

KEYWORDS: स्वावलम्बी भारत अभियान, स्वरोजगार, युवा, कौशल विकास

प्रस्तावना

भारत एक विशाल जनसंख्या वाला राष्ट्र हैं। जिसकी आर्थिक और सामाजिक संरचना विविधताओं से भरी हुई है। जनसंख्या की दृष्टि से ये युवा राष्ट्र है। यहाँ 60 प्रतिषत से अधिक जनसंख्या युवा वर्ग में आती है। इस विशाल मानव संसाधन को बेरोजगारी से बचाने, उत्पादक दिशा देने और आर्थिक विकास को गति प्रदान करने के लिए आवश्यक है कि वह केवल नौकरी पर आधारित ना रहे, बल्कि स्वरोजगार के माध्यम से स्वयं एवं दूसरों के लिए अवसर सृजित कर सके। स्वरोजगार की अवधारणा भारतीय संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही क्षेत्रों में आर्थिक सशक्तीकरण का प्रमुख साधन है। स्वरोजगार न केवल रोजगार उपलब्ध कराता है, बल्कि व्यक्ति को आर्थिक स्वतंत्रता, स्वाभिमान और उद्यमषीलता की ओर प्रेरित भी करता है। इसी उद्देश्य के साथ भारत में कोविड–19 महामारी के बाद स्वावलम्बी भारत का विचार अस्तित्व में आया जो वर्ष 2022 में स्वावलम्बी भारत अभियान के रूप में स्थापित हुआ।

स्वावलम्बी भारत अभियान : एक परिचय

स्वावलम्बी भारत अभियान भारत को बेरोजगारी रहित और गरीबी रहित बनाने का व्यापाक अभियान है। यह भारतीय युवाओं की मनोवृत्ति को नौकरी से हटाकर स्वरोजगार की ओर मोड़ने का प्रयास है। यह प्रयास सरकारी न होकर गैर–सरकारी राष्ट्रवादी सामाजिक–आर्थिक संगठन स्वदेषी जागरण मंच की देन है। मंच ने गैर–सरकारी होते हुये भी इस अभियान हेतु सरकार का समर्थन प्राप्त किया है। अतः विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक, सरकारी और निजी संस्थानों के सहयोग से स्वावलम्बी भारत अभियान भारतीय युवाओं में उद्यमिता और कौषल–विकास का प्रयास कर रहा है। यह अभियान न केवल एक नीति आधारित प्रयास है, अपितु एक व्यापक दृष्टिकोण है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन, स्थानीय उत्पादों के सरशक्तिकरण, उद्यमिता के प्रोत्साहन और स्वरोजगार सृजन को बढ़ावा देने तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत की भूमिका को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से प्रारंभ किया गया है।

स्वावलम्बी भारत अभियान : रोजगार संवर्धन के प्रयास

स्वावलम्बी भारत अभियान के अन्तर्गत भारतीय युवाओं को स्वरोजगारी बनाने, महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने तथा सीमान्त वर्गों तक रोजगार पहुंचाने हेतु अनेक प्रकार के कार्य सम्पादित किये जा रहे हैं। इनमें से कुछ प्रमुख प्रयास निम्नलिखित हैं–

1– कौशल विकास शिविर और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन

स्वावलंबी भारत अभियान के अन्तर्गत कौशल को रोजगार से जोड़ने के लिए बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इस अभियान का प्रमुख लक्ष्य देश की कार्यशील आबादी को वर्तमान उद्योगों, स्थानीय शिल्पों तथा उभरते आर्थिक क्षेत्रों से जोड़ते हुए उन्हें व्यावहारिक बाजारोंमुख तथा रोजगार–सृजनकारी कौशलों से सशक्त बनाना रहा है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए विभिन्न सरकारी – गैर सरकारी संस्थानों के सहयोग से विविध प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। देश भर में युवाओं को विभिन्न कौशलो में प्रशिक्षित किया जाता है, जैसे– सिलाई, बुनाई, डिजिटल सेवाएं, मोबाइल/कंप्यूटर रिपेयर, फूड प्रोसेसिंग, इलेक्ट्रॉनिक वर्क, कृषि आधारित उद्यम, ऑनलाइन व्यावसाय आदि।

2– महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन

स्वावलंबी भारत अभियान में महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और कौशल आधारित रूप से सशक्त बनाने के लिए विशेष कार्यक्रमो का महत्वपूर्ण स्थान है। इनका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को उत्पादन, उमिता, बाजार संपर्क, डिजिटल साक्षरता, वित्तीय पहुँच और निर्णयकर्ता की भूमिका में अग्रसर करना है, जिससे उनके जीवन में दीर्घकालिक आत्मनिर्भरता स्थापित हो। महिलाओं के कौशल विकास हेतु विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। जिनका उद्देश्य उन्हें स्वरोजगार एवं उद्यमिता के लिए सक्षम बनाना है। इन कार्यक्रमो के माध्यम से जो स्वयं सहायता समूह, महिला उद्यमी के लिए ऋण, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, डिजिटल सशक्तिकरण कार्यक्रम, उज्ज्वला योजना, मातृ वंदना योजना, प्रारंभिक कलाओं एवं लोक उद्योगों का पुनर्जीवन, महिला स्टार्टअप एवं नवाचार को बढ़ावा और व्यापार एवं विपणन सुविधा आदि है।

3– रोजगार मेलों और अवसर प्लेटफार्म की स्थापना

स्वावलंबी भारत अभियान के अंतर्गत रोजगार मेले और अवसर प्लेटफॉर्म की स्थापना महत्वपूर्ण प्रयास है जिनका उद्देश्य युवाओं को प्रत्यक्ष रोजगार के अवसरों से जोड़ना है। इन मेलों में विभिन्न सरकारी विभागों को, निजी कंपनियों, उद्योगों और स्टार्टअप्स को एक ही मंच पर लाया जाता है, ताकि बेरोजगारों को उनकी योग्यता और कौशल के अनुसार नौकरी मिल सके। इसके साथ ही युवाओं को खाली पदों की जानकारी, उद्यमिता मार्गदर्शन, मार्केटिंग लिंकिंग जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। यह प्रयास युवाओं को स्वावलंबन की दिशा में अग्रसर करते हैं और देश की आर्थिक प्रगति को गति देते हैं।

4– युवाओं को रोजगार दाता बनाने का प्रयास

स्वावलंबी भारत अभियान का एक प्रमुख उद्देश्य युवाओं को रोजगार खोजी से रोजगार दाता बनाना है। इसके तहत युवाओं को केवल नौकरी पाने के लिए सक्षम नहीं बनाया जाता, बल्कि उन्हें अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। सरकार और विभिन्न संस्थांए युवाओं को उद्यमिता प्रशिक्षण, स्टार्टअप मार्गदर्शन, तकनीकी सहायता और वित्तीय सहयोग प्रदान करती है। कौशल विकास कार्यक्रम के माध्यम से युवा नए कौशल सीखकर छोटे उद्योग, सेवा क्षेत्र, डिजिटल व्यवसाय, हस्तशिल्प, कृषि आधारित उद्यम और स्टार्टअप

Copyright© 2025, IEASRJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

स्थापित कर पाते हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना, नए व्यवसाय स्थापित करने और दूसरों को रोजगार उपलब्ध कराने की क्षमता विकसित करना है, जिससे देश में रोजगार अवसरों का विस्तार हो सके।

5– एम.एस.एम.ई. और स्थानीय उद्योगों का समर्थन

अभियान के अंतर्गत स्थानीय उद्योगों को विभिन्न सहायता– आसान ऋण उपलब्ध कराना, तकनीकी सुधार, पैकेजिंग और ब्रांडिंग में सहायता, लोकल फॉर–वोकल के तहत विपणन, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उत्पाद लाने में मार्गदर्शन आदि प्रदान की जाती हैं। ये प्रयास छोटे उद्योगों को बड़े बाजार तक पहुंचाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

6– ग्रामस्तरीय रोजगार सृजन के प्रयास

ग्रामीण युवाओं को गांव में ही रोजगार उपलब्ध कराने के लिए हस्तशिल्प मेले, स्थानीय उत्पाद प्रदर्शनियाँ, ग्राम आधारित उद्योगों की पहचान और कृषि उत्पादों का मूल्य संवर्धन जैसी गतिविधियों को बढ़ावा दिया गया है।

7– उद्यमिता विकास के लिए जागरूकता अभियान का संचालन

स्वावलंबी भारत अभियान के अंतर्गत उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न जागरूकता अभियानों का संचालन किया जाता है। इन अभियान का उद्देश्य युवाओं, महिलाओं, ग्रामीण समुदायों और छोटे व्यवसायों में उद्यमिता के महत्व तथा संभावनाओं के प्रति समझ विकसित करना है। इस प्रयास के तहत उद्यमिता कार्यशालाएं, बिज़नेस मॉडल प्रशिक्षण, वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम और मेंटरशिप कैंप आयोजित किए जाते हैं। कार्यशालाएं और सेमिनार आयोजित कर युवाओं को बताया जाता है कि – व्यवसाय कैसे शुरू करें, पूंजी कहाँ से लाएं, मार्केटिंग और ऑनलाइन बिक्री कैसे करें तथा ग्राहक कैसे बढ़ाएं आदि। इन जागरूकता अभियानों के परिणामस्वरूप समाज में उद्यमिता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है, नए स्टार्टअप और उद्योगों की संख्या बढ़ती है, और लोगों में आत्मनिर्भरता की भावना मजबूत होती है। इससे न केवल रोजगार सृजन होता है बल्कि स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक विकास को भी गति मिलती है।

8– निजी व सरकारी संस्थाओं के नेटवर्क का निर्माण

अभियान ने शिक्षा संस्थानों, सामाजिक संगठनों, उद्योग निकायों और स्थानीय प्रशासन को जोड़कर एक व्यापक नेटवर्क बनाया है। इस सहयोग से प्रशिक्षण, वित्त, विपणन, नवाचार जैसे क्षेत्रों में प्रभावी परिणाम प्राप्त हुए हैं।

9– डिजिटल सशक्तिकरण के प्रयास

डिजिटल इंडिया की भावना को आगे बढ़ाते हुए – डिजिटल भुगतान सिखाना, ऑनलाइन मार्केटिंग, सोशल मीडिया ब्रांडिंग तथा ई कॉमर्स प्रशिक्षण प्रदाताओं को डिजिटल प्रतिस्पर्धा में सक्षम बनाया गया है।

स्वावलम्बी भारत अभियान : प्रभाव एवं उपलब्धियाँ

रोजगार तथा आर्थिक–सामाजिक सषक्तिकरण हेतु संचालित स्वावलम्बी भारत अभियान के अन्तर्गत किये जा रहे प्रयासों के अनेक सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगत हुये हैं। अभियान के कुछ प्रमुख प्रभाव एवं उपलब्धियाँ निम्नवत् हैं–

1. युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिषा में देष तेजी से आगे बढ़ा है।
2. युवा समाज में उद्यमिता की भावना विकसित हुई है।
3. स्वरोजगार के लिए वातावरण बना है।
4. कौशल आधारित रोजगारों में वृद्धि हुई है।
5. स्थानीय एवं जियो टैगिंग उत्पादों की लोकप्रियता बढ़ी है।
6. स्वदेशी उत्पादन में वृद्धि हुई है।
7. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों का विकास हुआ है।
8. सामाजिक–आर्थिक सशक्तीकरण में यह अभियान प्रभावी सिद्ध हुआ है।
9. सीमांत वर्ग तक रोजगार के अवसरों और कौषल विकास कार्यक्रमों की पहुंच सम्भव हुई है।
10. महिलाओं की आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई है।
11. ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्राप्त हुई है।
12. अभियान को सफल बनाने हेतु 45 से अधिक सषक्त संगठन सक्रिय हुये हैं।
13. रोजगार सृजन हेतु 430 से अधिक रोजगार सृजन केन्द्र स्थापित हुये हैं।
14. स्वावलम्बी योजनाओं से युवाओं को जोड़ने हेतु 600 से अधिक स्वावलम्बन केन्द्र संचालित हुये हैं।
15. जागरूकता वृद्धि हेतु 500 से अधिक रोजगार मेले आयोजित किये गये हैं।
16. जागरूकता वृद्धि हेतु 5000 से अधिक सेमीनार तथा अन्य प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं।
17. पूरे देष में 15000 से अधिक डिजिटल स्वयं सेवक इस अभियान हेतु कार्य कर रहे हैं।
18. देष में 28000 से अधिक भौतिक स्पर्ष बिन्दु विभिन्न स्थानों पर सक्रिय हैं।
19. अभियान के माध्यम से 12200 से अधिक लोगों को नौकरियां प्राप्त हुई हैं।
20. अभियान के माध्यम से 400000 से अधिक युवा स्वरोजगारी बने हैं।

निष्कर्ष

स्वावलम्बी भारत अभियान का मॉडल कौशल, संसाधन, पूंजी तथा स्थानीय अवसरों का समन्वय करके एक ऐसी संरचना तैयार करता है जिसमें व्यक्ति अपनी आय का स्थायी स्रोत स्वयं विकसित कर सके। यह मॉडल विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों, महिलाओं, युवाओं, और पारंपरिक शिल्पकार वर्ग के लिए अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ है। अभियान विशेष रूप से ये सीखता है कि कम पूंजी में छोटे उद्योग, व्यवसाय तथा सेवाएं कैसे प्रारम्भ की जा सकती हैं। इस सन्दर्भ में अभियान का महत्वपूर्ण प्रभाव दृष्टिगत हुआ है। स्वावलंबी भारत अभियान की सफलता में सरकारी पहलों के साथ–साथ सामाजिक संगठनों की सक्रिय भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। सामाजिक संगठन – जिनमें गैर सरकारी संस्थाएँ, स्वयंसेवी समूह, सामुदायिक संगठन, महिला मंडल, युवा क्लब, धार्मिक सामाजिक संस्थान और एसएचजी नेटवर्क सम्मिलित हैं ने इस अभियान को जनआंदोलन का स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी सहभागिता ने न केवल जागरूकता बढ़ाई, अपितु कौशल–विकास, रोजगार सृजन, उद्यमिता संवर्धन और सामाजिक–आर्थिक सषक्तिकरण के क्षेत्र में भी ठोस परिणाम भी उत्पन्न किए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://hindi.mysba.in/about/
2. पांडे गिरीश चन्द्र – आत्मनिर्भर भारत, स्वदेशी जागरण मंच
3. न्यू इण्डिया समाचार (पत्रिका), सुशासन से स्वावलम्बन की नई राह।
4. न्यू इण्डिया समाचार (पत्रिका), जीवन में सहजता से स्वावलम्बन की आधारशिला।
5. न्यू इण्डिया समाचार (पत्रिका), स्वरोजगार के सपने को मिल रही है नई उड़ान।
6. न्यू इण्डिया समाचार (पत्रिका), जल–जंगल में खोज लिया स्वावलम्बन।